स्पष्टीकरणः

एक गम्भीर डर आज-कल परिवार सामना कर रहा हैं, वह है परिवार साथ मिलकर समय बिताने का वक्त नहीं। हम काम करने या सामाजिक बनने या टी.वी देखने के कारण एक दूसरे के लिए बहुत कम समय देते हैं। अफसोस!!!

यह कहानी उस वकील के बारे में जो अपने बुजुर्ग पिता के साथ कुछ दूरी में रहती है। साथ रहकर कई महीने पार हो गया और जब भी पिता पूछता है कि कब मिलने आ रही है, तो कई बहाना बना देती है कि मिलने के लिए समय नहीं है; जैसे कि कचहरी में सूची पत्र बनाना है, मीटिंग है, नया ग्राहक मिला है, खोज करना है इतयादि। अन्त में पिता ने पूछा, ''जब मैं मरूँगा क्या मेरा अन्तिम संस्कार करने के लिए आने का उद्देश्य है''। बेटी ने तुरन्तु जवाब दिया,''डैडी मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि आप ऐसे पूछेंगे! अवश्य आऊँगी''। इस पर पिता ने बोला ''अच्छा, दफन को भूल जाओ और आओ; मुझे अभी तेरी जरूरत है, बाद में नहीं''।

परिवार के साथ समय बिताने का अर्थ यह है कि हम अपने परिवार को दिखाना है कि हम प्यार करते हैं। जब हम अपने परिवार को प्यार करते हैं तो हम अपने समय उनके साथ बिता के अपने आप को कुर्बान करते है, जब हमें पता चलता है कि समय न देने से हम उन्हें अपने प्यार से वंचित करते हैं तब हम उन्हे चोट पहुँचाते हैं।

ईसाई परिवार

''ईसाई परिवार के साथ, विश्वास में दृढ़ रहने के लिए माँ-बाप पहला शिक्षक है'' और ''बच्चों के मामला में विश्वास का पहला सन्देशवाहक भी''। परिवार सारे सदस्यों से बना हुआ है और हरेक अलग-अलग तरीका से सहयोग दे कर अच्छा परियावरण तैयार कर सकते हैं। जहाँ ईश्वर के प्यार भरे उपस्थिति को जागृत करें और येसु मसीह में जो विश्वास है उन्हे प्रकट करें, उत्साहित करें और जीएं''।

(Directory for Catechesis)

सूचनाः कृप्या सारे परिवार के लिए ईश कृपा की दस्वीर उपलब्त करवाएं

Imprimatur: Rt.Rev.Ignatius L. Mascarenhas, Bishop of Simla Chandigarh

मेरा विश्वास की यात्रा

(परिवार का वर्ष - सिमला - चण्डिगढ़ धर्मप्रान्त)

अंक : 1 *वर्ष 2015*

योजनाएँः

1. पैरिश दल (पुरोहित,धर्मबहनें एवं प्रचारक) महिनें में कम से कम 20 परिवारो में मिलने जायेंगे। महिने के समाप्ति में एकसात बैटकर मूल्यांकन करेंगे कि उन परिवारों में क्या-क्या मुश्किले और जरुरतें है और उनका समाधान (हल) करेंगे।
2. हमारी धर्मप्रान्त के सब पल्लियों मे ''ईश्वरीय करुणा के पर्व के रविवार'' पर परिवारो पर अधारिध प्रवचन दिया जाये और इसका विशेष महत्व लोगों मे जगृत किया जाये कि सिनड का परिवारों मे क्या तात्पर्य है।
3. अप्रैल 11, 215 तक सभी पल्लियों मे ''पल्लि परिवार समूह'' बनाया जाये।
4. किसमस के बाद 'पवित्र परिवार के पर्व' परिवारिक दिवस के रुप मे मनाया जाये।
5. हमारे धर्मप्रन्त मे 'परिवारिक वर्ष' की समाप्ति 'ख्रिस्त राजा के पर्व' 22 नवंबर 2015 में की जायेगी।

पवित्र परिवार घरेलू कलीसिया का प्रतीक है, जो एक साथ प्रार्थना करने के लिए बुलाया गया है। परिवार घरेलू कलीसिया का प्रतीक है और प्रार्थना का पहला स्कूल होना है। यह परिवार ही है जहाँ बच्चे, बचपन से ही ईश्वर के बारे में सिखते और अनुभव करते है। धनयवाद उन माता पिता की शिक्षा और अच्छे उदाहरण के लिए, जो उनहे ईश्वरीय उपस्थिती में रहने का वातावरण बनाते है।

- Pope Emeritus Benedict XVI,Dec,28th,2011

क्यों पारिवारिक धर्म शिक्षा परिवारिक धर्म शिक्षा का लाभः महत्वपूर्ण है ?

परिवार ऐसी जगह है जिसमें सुसमाचार प्रसारित किया जाता है और जिससे आगे बढ़ता है। परिवार में, जो धर्म शिक्षा का केन्द्र है, सुसमाचार को प्रसारित करने की अनोखा सुविधा है जो मानवीय बहूमूल्यता का मूल है। यह सचमुच में ईसाई शिक्षा अधिकतर शिक्षित के बदले शाक्षी देते, अनियमित के बदले नियमित और रोज जारी रखने के बदले समय के अनुसार योजना बनाते हैं।

''ईसाई परिवार के साथ, विश्वास में दृढ़ रहने के लिए माँ-बाप पहला शिक्षक है'' और ''बच्चों के मामला में विश्वास का पहला सन्देशवाहक भी''। परिवार सारे सदस्यों से बना हुआ है और हरेक अलग-अलग तरीका से सहयोग दे कर अच्छा परियावरण तैयार कर सकते हैं जहाँ ईश्वर के प्यार भरे उपस्थिति को जागृत करें और येसु मसीह में जो विश्वास है उन्हे प्रकट करें, उत्साहित करें और जीएं''।

1. *परिवारिक विश्वास को सीखने और दृढ़ बनाने के लिए पूरा परिवार के सदस्यों को शामिल होना अनिवार्य है।*
2. *परिवार विश्वास को अभ्यास करने के लिए शिक्षित करने, नमूना बनाने और प्रदर्शन करने की तरीका उपलब्ध कराती है।*
3. *घर में ईसाई दस्तूर में परिवार जीने के लिए उपाय उपलब्ध है।*

माँ-बाप अपने आत्मविश्वास और क्षमता को अपने बच्चों के साथ विश्वास और मूल्यता के आदन-प्रदान करने का निर्माण करती है।

अगर हम चाहते हैं कि बच्चों और किशोर जीवन-भर कथोलिक और कलीसिया के सदस्य बनना है तो कलीसिया के जीवन में शामिल होने के लिए पूरा परिवार अभी से तैयार होना है।

कलीसिया परिवार की सेवा में

परिवार आधुनिक दुनिया में, यहाँ तक की और शायद दूसरे संस्था से ज्यादा अत्यंत और तेज बदलाव से समाज और संस्कृति घेरा हुआ है। अनेक परिवार इस परिस्थिति में उस तात्पर्य पर आशा रखते हैं जो परिवार का भवन का नीव है। दूसरों अस्थिर होते और अपने कार्य में घबराते या सन्देह भी करते और अधिक्तर परिवारिक जीवन का मुख्य अर्थ और विवाहित सत्य को अनजान कर देते हैं। अन्त में ऐसी कई लोग है जो अपने अन्याय के अलग-अलग समस्या में अपने मूलभूत अधिकार को एहसास करना भूल जाते हैं।

यह जानते हुए कि विवाह और परिवार मानव तात्पर्य से बना हुआ है, कलीसिया बात करना चाहती है और उन लोगों को मदद करना चाहती है जिन्होंने विवाह अहमियत को जानते हैं और परिवार जो ईमानदारी से जीना चाहते हैं, उनको जो अनिश्चित, चिन्तित और सत्य की खोज में है, उनको जो परिवारिक जीवन खुशी से जीने की विघ्न-बाधा बनते हैं। पहले को सहायता देते हुए, दूसरे पर रोश्नी डालते हुए और दूसरों को सेवा करते हुए विवाह एवं परिवार के भाग्य के बारे जानने के लिए उत्सुक होने वाले हरेक को कलीसिया अपने सेवा प्रदान करती है।

विशेष रूप से कलीसिया, जवानों को सम्बोधित करते हुए कहती है कि जो विवाह और पारिवारिक जीवन की ओर यात्रा आरम्भ करते है, नई दिशा की ओर कदम रखने की उद्देश्य से अपने को समर्पण करते, जीवन में सुन्दर और शान है प्यार और सेवा करना इन्हें खोज निकालने की मदद करती है।

आधुनिक दुनिया में ईसाई परिवार का भूमिका – संत योहन पौलुस द्वितीय

(Familiaris Consortio से लिया गया है)

शिक्षण बिंदु

पढ़ने के लिए : मत्तीः 18:21-22; 22: 23-35

कथोलिक कलीसिया का धर्म-शिक्षा : ईश्वर की योजना में परिवार

परिवार का गुण : 2201, 2202, 2203

ईसाई परिवारः

2204: ''हमें अहसास होना चाहिए कि ईसाई परिवार विशेष प्रकासन और कलीसिया के सदस्य से बना हुआ है। इस कारण से इन्हें ''घरेलू कलीसिया'' बुलाते हैं। यह विश्वास, आशा और दया का संगत है ; नया नियम के साक्ष्य के अनुसार यह कलीसिया में एकमात्र महत्वपूर्ण माना जाता है।

2205: ईसाई परिवार सदस्यों का समूह जैसे कि पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का समूह का प्रतिरूप और निशान है। प्रजनन में और बच्चों के शिक्षा में पिता का सृष्टि का कार्य दर्शाता है। यह येसु के बलिदान और प्रार्थना में भागिदार होने के लिए बुलाता है। दैनिक प्रार्थना ओर बाईबल पाठ सेवा करने में मज़बूत बनाता है। ईसाई परिवार को प्रवार करने और मिशन का काम करने को मौका मिला है।

2206 : परिवार के भीतर जो रिश्ता है वह बन्धुत्व का अहसास दिलाना, प्रेम और दिलचस्पी पैदा करना आदि सदस्यों के आन-मान जो एक दूसरों के लिए है उसमें से उदय होती है। परिवार एक गौरवान्वित समुदाय है जिन्हें ''विचार का आदन-प्रदान और जीवन-साथी द्वारा सामान्य विचार विमर्श और बच्चों की शिक्ष-दीषा में माँ-बाप के सहयागिता'' द्वारा पाने के लिए बुलाये गये हैं।

परिवारिक भक्ति एवं प्रार्थना

ईसाई विश्वास हमारे जीवन को प्रभावित करती है और हमें आजीवन पढ़ाई, मनन-चिन्तन और प्रार्थना में शामिल करती है। पारिवारिक भक्ति बाईबल के बारे और ईसाई परम्परा के बारे जो एक परिवार है अधिक जानकारी देती है और येसु मसीह के अनुयायी होने के कारण दैनिक जीवन में उस शिक्षा को लागु करना है। इस भक्तिमय जीवन का समझ, असीमित, सार्वजनिक पूजा, सोने का समय, प्रार्थना, बाईबल पढ़ना, खाने के पहले और बाद की प्रार्थना, सुबह व शाम की प्रार्थना और दिन या रात कभी भी अकेला प्रार्थना करना आदि शामिल है।

अप्रेल महीने का परिवारिक भक्ति

ईशवरिय कृपा : अप्रैल महीने में येसु की ईशवरिय कृपा की तस्वीर घरों में रख कर ईशवरिय कृपा की माला जपना जरूरी है। समय निकालकर परिवारों को येसु की ईशवरिय कृपा के बारे जानकारी दे और परिवारों को उन को समर्पित करें।

क्रियाकलाप :

1. परिवारिक प्रार्थना : मिलकर प्रार्थना करना – सहायता, मार्ग दर्शन एवं शक्ति के लिए ईश्वर की ओर मोड़ना।

2. परिवारिक भोज : एक साथ भोजन करना, खाने के पहले और बाद की प्रार्थना करना।

अभ्यास :

''धन्य है वे जो दयालु हैं! उन पर दया की जायेगी'' मत्ती : 5:7

दुनिया की आशीर्वचन कुछ अलग है; वह इस प्रकार हैः ''धन्य है वह मनुष्य जो अपने बारे सोचता है'' हमारे प्रभु इसे सुधारने आया; सामान्य जीवन की शुरुवात में आशीर्वचन के पर्वत पर उसने प्रवचन दिया ''धन्य है वे जो दयालु हैं! उन पर दया की जायेगी'' सामान्य जीवन के अन्त में कलवारी पहाड़ पर उस आशीर्वचन को अमल किया जब डाकू से कहा,''तुम आज ही परलोक में मेरे साथ होगे'' (लूकसः 23:43)

परिवार में हर एक सदस्य यह महसूस करे कि दूसरों के दुख-मुसीबत मेरा ही है। सहानुभूति ही कृपा है जो दूसरों के दुख-संकट को हल्का करने की खोज में है। जब तक हम दूसरों पर दया नहीं करते तो ईश्वर भी हम पर दया नहीं करता।

''अपने स्वर्गीय पिता-जैसे दयालु बनो..'' (लूकसः 6:36)

हमेशा जपें : येसु की ईशवरीय कृपा मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ (अधिक से अधिक बोलें)